UNIVERSITY NEWS 29 OCTOBER 2025

HINDUSTAN

तस्वीर की भावनाओं को समझ सकेंगे

दावा

लखनऊ, कासं। एलयू के इंजीनियरिंग फैकल्टी के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रेम शंकर यादव ने एक नई तकनीक विकसित की है। जो तस्वीरों और टेक्स्ट दोनों के आधार पर इंसानों की भावनाओं को पहचानने का दावा करती है।

डा. प्रेम शंकर यादव ने बताया कि अब तक ज्यादातर सिस्टम या तो सिर्फ टेक्स्ट (जैसे सोशल मीडिया पोस्ट) या सिर्फ तस्वीरों से भावनाओं का पता लगाते थे, लेकिन ऐसा करने से इंसानी भावनाओं की पूरी गहराई पकड़ में नहीं आती थी। कई बार तस्वीरों में एक भावना होती है, लेकिन उसके साथ लिखा गया टेक्स्ट कुछ और कहता है। डा. यादव ने बताया कि उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए किसी ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर डाली है जिसमें वह मुस्करा रहा है, लेकिन कैप्शन लिखा है कि मुस्कान तो है, पर दिल में दर्द बहुत है। अगर सिस्टम सिर्फ तस्वीर देखेगा तो उसे लगेगा व्यक्ति खुश है, लेकिन अगर टेक्स्ट को भी समझेगा तो पता चलेगा कि व्यक्ति दुखी है। डॉ. यादव की तकनीक दोनों जानकारियों (तस्वीर और टेक्स्ट) को जोड़कर ऐसी सूक्ष्म भावनाओं को सही-सही पहचान सकती है। इस शोध में टेक्स्ट के लिए शब्दों और उनके अर्थों (जैसे संज्ञा, विशेषण, क्रियाएं आदि) का विश्लेषण किया गया, जबकि तस्वीरों के लिए रंग, आकार, और पैटर्न जैसी चीजों का अध्ययन किया गया। इन सब जानकारियों को मिलाकर मॉडल बनाया गया है जिसे व्हेल-हनी बैजर ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिदम कहा जाता है। यह मॉडल खुद सीखता है कि कौन सी जानकारी भावना पहचानने में ज्यादा उपयोगी है।

फिल्मों, विज्ञापनों और ऑनलाइन समीक्षाओं में उपयोगी

डॉ. यादव ने बताया कि यह तकनीक सोशल मीडिया विश्लेषण, फिल्मों, विज्ञापनों और ऑनलाइन समीक्षाओं जैसी जगहों पर उपयोगी साबित हो सकती है, जहां लोगों की भावनाओं को समझना जरूरी होता है। उन्होंने कहा कि यह भविष्य में भावनाओं को समझने वाली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

प्रो. सतेन्द्र पाल सिंह बने संकाय अध्यक्ष

लखनऊ। एलयू के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय में प्रो सतेन्द्र पाल सिंह ने संकायाध्यक्ष पद का कार्यभार विधिवत रूप से ग्रहण किया। कार्यभार ग्रहण समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के अनेक वरिष्ठ शिक्षकगण, संकाय सदस्य एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो अशोक कुमार सिंह को कुशल नेतृत्व के लिए सम्मानित किया गया।

DAINIK JAGRAN

एक नजर में

डीन प्रो. सतेंद्र पाल सिंह ने संभाला कार्यभार

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय में प्रो. सतेंद्र पाल सिंह ने मंगलवार को संकायाध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया। अभी तक इस पद पर तैनात रहे प्रो. अशोक कुमार सिंह के कार्यकाल का तीन साल पूरा होने पर यह दायित्व प्रो. सतेंद्र पाल सिंह को सौंपा गया है। इस अवसर पर प्रो. अशोक को उनके संकाय हित में अमूल्य योगदान के लिए बधाई दी गई। (वि.)

प्रयोगात्मक परीक्षा 12 से

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. गौरी सक्सेना ने बी.एससी प्रथम सेमेस्टर की प्रयोगात्मक परीक्षा की तिथि जारी कर दी। यह परीक्षाएं 12 व 13 नवंबर को वनस्पति विज्ञान विभाग में होंगी। छात्र-छात्राएं लखनऊ विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.lkouniv.ac.in पर परीक्षा से संबंधित जानकारी ले सकते हैं। (वि.)

मौखिक परीक्षा चार को

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय की अधिष्ठाता प्रोफेसर अर्चना सिंह ने बी.काम पांचवें सेमेस्टर रेगुलर व सेल्फ फाइनेंस छात्र-छात्राओं की इंटर्नशिप प्रोजेक्ट रिपोर्ट की मौखिक परीक्षा की तिथि तय कर दी है। यह परीक्षा चार नवंबर को दोपहर 3:30 बजे से वाणिज्य संकाय के ओल्ड ब्लाक स्थित अधिष्ठाता कक्ष में होगी। छात्र-छात्राओं को समय से उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं। (वि.)

लखनऊ विश्वविद्यालय में आनलाइन कोर्सों का शैक्षणिक कैलेंडर जारी

यूजी में चार व पीजी में **पांच यूनिट** में होगी जुलाई-अगस्त बैच की पढ़ाई

जागरण संवाददाता • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने आनलाइन पाठ्यक्रमों के जुलाई-अगस्त 2025 बैच में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए एकेडमिक कैलेंडर जारी कर दिया है। आनलाइन स्नातक पाठ्यक्रमों की इस बैच की पढ़ाई चार यूनिट में और परास्नातक की पांच यूनिट में पूरी होगी। लखनऊ यूनिवर्सिटी सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रो. पियूष भार्गव ने बताया कि विद्यार्थी https://luonlineeducation.in/ पर विस्तृत एकेडमिक कैलेंडर देख सकते हैं। इनकी परीक्षाएं फरवरी में कराने की तैयारी है।

स्नातक की समय सारिणी : प्रथम सेमेस्टर की यूनिटी-1 की पढ़ाई 17 नवंबर तक और असाइनमेंट 17 से 23 नवंबर तक जमा होंगे। द्वितीय यूनिट में 18 नवंबर से 12 दिसंबर तक अध्ययन, 12 से 18 दिसंबर तक असाइनमेंट जमा करना होगा। तीसरी यूनिटी में 13 दिसंबर से छह दिसंबर तक अध्ययन, छह से 12 जनवरी तक असाइनमेंट और चौथी यूनिट में सात से 31 जनवरी तक कोर्स पूरा करने के साथ ही 31 जनवरी से छह फरवरी तक असाइनमेंट जमा होंगे।

परास्नातक में ये हैं प्रमुख तिथियां : प्रथम यूनिट में 12 नवंबर तक अध्ययन, 12 से 18 नवंबर तक असाइनमेंट जमा होंगे। दूसरी यूनिट में 13 नवंबर से दो दिसंबर तक पढ़ाई, दो से आठ दिसंबर तक असाइनमेंट, तीसरी यूनिट में तीन से 22 दिसंबर तक पढ़ाई, 22 से 28 दिसंबर तक असाइनमेंट, चौथी यूनिट में 23 दिसंबर से 11 जनवरी तक पढ़ाई, 11 से 17 जनवरी तक असाइनमेंट तथा पांचवी यूनिट की पढ़ाई 12 से 31 जनवरी तक होगी। इसके असाइनमेंट 31 जनवरी से छह फरवरी तक जमा किए जाएंगे।

तीन बैच की परीक्षाएं कल से : विश्वविद्यालय प्रशासन ने आनलाइन पाठ्यक्रमों में तीन बैच की परीक्षाओं की समय सारिणी जारी कर दी है। जनवरी 2025 बैच के प्रथम सेमेस्टर, जुलाई 2024 बैच के द्वितीय सेमेस्टर और जनवरी 2024 बैच के तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 30 अक्टूबर से शुरू होंगी। प्रो. पियूष भार्गव ने बताया कि यह परीक्षाएं 13 नवंबर तक लवि परिसर में होंगी। इसके लिए विद्यार्थियों के प्रवेश पत्र जारी किए जा चुके हैं। परीक्षा का समय सुबह 11 से दोपहर दो बजे तक रहेगा।

17 से 23 नवंबर तक जमा होंगे स्नातक प्रथम सेमेस्टर के असाइनमेंट

भावनाओं का राज बताएगा एआइ माडल

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के फैकल्टी आफ इंजीनियरिंग फैकल्टी के सहायक प्रोफेसर डा. प्रेम शंकर यादव ने एक नई तकनीक विकसित की है, जो तस्वीरों और टेक्स्ट दोनों के आधार पर इंसानों के चेहरे के भाव (सेंटीमेंट्स) को पहचानने में सक्षम है। एआइ आधारित यह शोध स्प्रिंगर नेचर के जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

डा. यादव ने बताया कि अब तक ज्यादातर सिस्टम या तो सिर्फ टेक्स्ट (जैसे सोशल मीडिया पोस्ट) या सिर्फ तस्वीरों से भावनाओं का पता लगाते थे। ऐसा करने से इंसानी भावनाओं की पूरी गहराई से पकड़ में नहीं आती थी। नई तकनीक तस्वीर और टेक्स्ट को जोड़कर ऐसे सूक्ष्म भावनाओं को सही-सही पहचान सकती है। इसमें टेक्स्ट के लिए शब्दों और उनके अर्थों का विश्लेषण किया गया, जबकि तस्वीरों के लिए रंग, आकार और पैटर्न जैसी चीजों का अध्ययन किया गया। इन सब जानकारियों को मिलाकर एक खास माडल बनाया गया है जिसे व्हेल-हनी बैजर आप्टिमाइजेशन एल्गोरिद्म कहा जाता है।

• लवि के इंजीनियरिंग फैकल्टी के सहायक प्रोफेसर डा. प्रेम शंकर यादव ने विकसित की नई तकनीक

I NEXT

एलयू में ऑनलाइन कोर्सों का एकेडमिक कैलेंडर जारी

स्नातक में चार और परास्नातक में पांच यूनिट में पूरी होगी जुलाई-अगस्त 2025 बैच की पढ़ाई

CONCEPT PIC

LUCKNOW (28 Oct) लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने आनलाइन पाठ्यक्रमों के जुलाई-अगस्त 2025 बैच में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के लिए एकेडमिक कैलेंडर जारी कर दिया है. आनलाइन स्नातक पाठ्यक्रमों की इस बैच की पढ़ाई चार यूनिट में और परास्नातक की पांच यूनिट में पूरी होगी. लखनऊ यूनिवर्सिटी सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रो.पियूष भार्गव ने बताया कि विद्यार्थी https://luonlineeducation.in/ पर विस्तृत एकेडमिक कैलेंडर देख सकते हैं. इनकी परीक्षाएं फरवरी में कराने की तैयारी है.

स्नातक की समय सारिणी

प्रथम सेमेस्टर की यूनिटी-1 की पढ़ाई 17 नवंबर तक और असाइनमेंट 17 से 23 नवंबर तक जमा होंगे. द्वितीय यूनिट में 18 नवंबर से 12 दिसंबर तक अध्ययन, 12 से 18 दिसंबर तक असाइनमेंट जमा करना होगा. तीसरी यूनिटी में 13 दिसंबर से छह दिसंबर तक अध्ययन, छह से 12 जनवरी तक असाइनमेंट और चौथी यूनिट में सात से 31 जनवरी तक कोर्स पूरा करने के साथ ही 31 जनवरी से छह फरवरी तक असाइनमेंट जमा होंगे.

तीन बैच की परीक्षाएं कल से

विश्वविद्यालय प्रशासन ने आनलाइन पाठ्यक्रमों में तीन बैच की परीक्षाओं की समय सारिणी जारी कर दी है. जनवरी 2025 बैच के प्रथम सेमेस्टर, जुलाई 2024 बैच के द्वितीय सेमेस्टर और जनवरी 2024 बैच के तीसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 30 अक्टूबर से शुरू होंगी. प्रो.पियूष भार्गव ने बताया कि यह परीक्षाएं 13 नवंबर तक एलयू परिसर में होंगी. इसके लिए विद्यार्थियों के प्रवेश पत्र जारी किए जा चुके हैं. परीक्षा का समय सुबह 11 से दोपहर दो बजे तक रहेगा.

ये हैं प्रमुख डेट्स

प्रथम यूनिट में 12 नवंबर तक अध्ययन, 12 से 18 नवंबर तक असाइनमेंट जमा होंगे. दूसरी यूनिट में 13 नवंबर से दो दिसंबर तक पढ़ाई, दो से आठ दिसंबर तक असाइनमेंट, तीसरी यूनिट में तीन से 22 दिसंबर तक पढ़ाई होगी.

NBT

तस्वीर और शब्दों से भावनाएं पहचानेगा AI

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ

एलयू के इंजीनियरिंग फैकल्टी के शिक्षक डॉ. प्रेम शंकर यादव ने एक ऐसी तकनीक विकसित करने का दावा किया है जो तस्वीर और शब्दों के माध्यम से भावनाएं पहचानने में सक्षम है। वर्तमान में मौजूद सॉफ्टवेयर, शब्दों या तस्वीरों में से किसी एक पर ही काम करते हैं। जबकि यह दोनों का एक इंटीग्रेटेड सिस्टम है, जिसकी मदद से इंसानी भावनाओं का सटीक ढंग से पता लगाया जा सकता है। इसे व्हेल-हनी बैजर ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिदम नाम दिया गया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बेस्ड यह मॉडल खुद सीखता है कि कौन सी जानकारी भावना पहचानने में सबसे ज्यादा उपयोगी है।

एआई मॉडल समझ जाएगा इंसान के इमोशन

लखनऊ यूनिवर्सिटी की फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. प्रेम शंकर यादव ने एक नई टेक्नीक डेवलप की है, जो फोटोज और टेक्स्ट के बेस पर ह्यूमन इमोशन्स को डिटेक्ट कर सकती है. डॉ. प्रेमशंकर ने बताया कि अभी तक ज्यादातर सिस्टम या तो सिर्फ टेक्स्ट या फिर सिर्फ फोटोज के सेंटिमेंट्स को डिटेक्ट कर पाते थे, लेकिन इस टेक्नीक से दोनों ही तरीके से इमोशन्स को परखा जा सकता है. इस मॉडल को व्हेल हनी बैजर ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिदम के नाम से जाना जाता है, जो खुद से सीखता है कि कौन सा डाटा किस तरह का है और कितना इम्पोर्टेंट है.

AMRIT VICHAR

प्रो. सतेन्द्र पाल का स्वागत करते पूर्व अध्यक्ष।

प्रो. सतेन्द्र पाल बने संकायाध्यक्ष

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय में प्रो. सतेन्द्र पाल सिंह ने संकायाध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया। उन्हें यह दायित्व प्रो. अशोक कुमार सिंह से प्राप्त हुआ, जिनका कार्यकाल शैक्षणिक, अनुसंधानात्मक एवं संस्थागत विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत उल्लेखनीय रहा। कार्यभार ग्रहण समारोह में विश्वविद्यालय परिवार के वरिष्ठ शिक्षकों, संकाय सदस्यों और प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति रही। प्रो. अशोक कुमार सिंह को सम्मानित किया गया। प्रो. सतेन्द्र ने कहा कि नवाचार के क्षेत्र में निरंतर प्रगति सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे।

आपकी भावनाएं पहचान लेगी मशीन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- लखनऊ विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग फैकल्टी ने तैयार किया यंत्र
- एआई मॉडल के आधार पर तैयार यंत्र करेगा अनेक कार्य आसान

अमृत विचार: आज के समय में मनुष्य की भावनाएं पहले से अधिक जटिल होती जा रही हैं। कई बार चेहरे पर कुछ और भाव झलकते हैं जबकि मन में कुछ और चलता है। अब लखनऊ विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग फैकल्टी में विकसित एआई आधारित यंत्र ऐसे लोगों की वास्तविक भावनाओं की पहचान उनके शब्दों और तस्वीरों के आधार पर करेगा। विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग फैकल्टी के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रेम शंकर यादव ने यह नई तकनीक तैयार की है।

डॉ. यादव ने बताया कि अब तक ज्यादातर सिस्टम या तो केवल टेक्स्ट (जैसे सोशल मीडिया पोस्ट) या केवल तस्वीरों से भावनाओं का विश्लेषण करते थे, जिससे व्यक्ति की भावनाओं की पूरी गहराई नहीं समझी जा सकती थी। अक्सर ऐसा होता है कि तस्वीर एक भावना दर्शाती है, जबकि उसके साथ लिखा गया टेक्स्ट कुछ और कहता है। इस चुनौती को दूर करने के लिए एक नया एआई मॉडल विकसित किया गया है जो चित्र और शब्द—दोनों को एक साथ विश्लेषित कर सटीक भावनात्मक मूल्यांकन करता है।

डॉ. प्रेम शंकर यादव

यह मॉडल 'व्हेल-हनी बैजर ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिद्म' पर आधारित है। इसमें टेक्स्ट के लिए संज्ञा, विशेषण और क्रियाओं का अर्थगत विश्लेषण किया गया, जबकि तस्वीरों के लिए रंग, आकार और पैटर्न जैसे तत्वों का अध्ययन किया गया। इन दोनों जानकारियों को मिलाकर सिस्टम व्यक्ति की मनोभावनाओं की सटीक पहचान करने में सक्षम है। यह तकनीक सोशल मीडिया विश्लेषण से लेकर मनोरोग निदान तक कई क्षेत्रों में उपयोगी साबित हो सकती है।

VOL

लविवि के अभियात्रिकी एवं तकनीकी संकाय के अध्यक्ष बने प्रो. सतेन्द्र पाल सिंह

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय में प्रो. सतेन्द्र पाल सिंह ने संकायाध्यक्ष पद का कार्यभार विधिवत रूप से ग्रहण किया। यह दायित्व उन्हें प्रो. अशोक कुमार सिंह से प्राप्त हुआ, जिनका कार्यकाल संकाय के शैक्षणिक, अनुसंधानात्मक एवं संस्थागत विकास की दृष्टि से अत्यंत उल्लेखनीय रहा। कार्यभार ग्रहण समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के अनेक वरिष्ठशिक्षकगण, संकाय सदस्य एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रो. अशोक कुमार सिंह को उनके कुशल नेतृत्व, शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति समर्पण तथा संकाय के सर्वांगीण विकास में दिए गए अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं सम्मान अर्पित किया गया। उनके कार्यकाल में संकाय ने कई नवाचारों, शोध परियोजनाओं एवं अकादमिक उपलब्धियों को प्राप्त किया, जो आने वाले वर्षों तक प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। प्रो. सतेन्द्र पाल सिंह के संकायाध्यक्ष पद ग्रहण को संकाय एवं विश्वविद्यालय समुदाय ने अत्यंत उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

TOI

Parental incarceration takes emotional toll on children: LU study

Mohita Tewari
@timesofindia.com

Lucknow: Children whose parents are behind bars suffer from high emotional distress, such as anxiety, sadness, or aggression, reveals a socio-legal research project conducted by the law faculty of Lucknow University.

The research has brought to light alarming data about the condition of children whose parents are incarcerated, either convicted or undertrials.

Conducted under the Centre of Excellence Scheme funded by the Uttar Pradesh govt, the study titled 'A Socio-Legal Study on the Impact of Incarceration on Child Adversity and Child Health with Special Reference to Lucknow District' examined 111 incarcerated parents through three detailed jail visits.

"The research revealed that 78% of the children of prisoners suffer emotional distress such as anxiety, sadness, or aggression. At least 64% face disruption in education, with many forced to drop out due to financial hardship. About 59% of respondents reported health-related problems in their children — ranging from malnutrition to frequent illness — while 52% mentioned social stigma and isolation in schools and neighbourhood," said law professor Vinita Kacker, who conducted the research.

She said though 99% of inmates were formally allowed to meet their children, 60% found those meetings emotionally inadequate because of barriers such as glass partitions and limited visiting hours. Only 18% were aware of any govt welfare scheme or legal aid available for their children.

"The findings were presented at a national seminar on 'Parental Incarceration and the Hidden Toll on the Well-Being of the Child', inaugurated by UP prisons minister Suresh Rahi recently. Experts and policymakers discussed reforms including child-friendly visitation spaces, psychological counselling, and educational assistance," she said.

Prof Kacker described these children as "the unseen victims of the criminal justice system", urging the creation of comprehensive welfare policies.

The study concludes that incarceration punishes not only offenders but also their families — especially children — who silently bear the emotional and social consequences. The Lucknow project stands as a wake-up call for integrating compassion with justice and for ensuring that no child grows up serving a sentence for a crime they never committed.